

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरुक्त-ग्रेट) 978-81-7450-892-8

प्रथम संस्करण : अबतूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : विसंबर 2009 पीप 1931

राष्ट्रीय क्रींक्षक अनुसंध्यन और प्रशिक्षण परिषद्, 2008.

#### PD IOT NSY

## पुस्तकमाला निर्याण समिति

कंचन संदी, कृष्ण कुमार, ज्योति संदी: दुलदुले विश्वास, मुकेश भश्नवीय, एपिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिन्त, सीमा कुमारी, गोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सवस्य-समन्ब्यक - लतिका गुप्ता

ভিয়াকৰ – দিখি কথবা

सरका तथा आवरण - निर्देश वाधवा

दी,दी,पी, ऑपरेटर - अवंग गुप्ता, अगृत गुप्ता, सीधा गाल

## ऑभार जापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निरंशक, प्रास्त्रिय हैंडिएक अनुसंख्य और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर समुधा कामध, अंबुक्त निरंशक, केन्द्रीय हैंडिक जैद्यांचिकी संस्थान, राष्ट्रीय हैंडिक जैद्यांचिकी संस्थान, राष्ट्रीय हैंडिक अनुसंख्य और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर कें, के, तिरंशित, विभागाच्यक, प्रारीधिक जिल्ली विभाग, राष्ट्रीय हीडिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्य शर्म, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय हीडिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजूला भाष्ट्र, अध्यक्ष, हिंदिक देवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय हीडिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

## राष्ट्रीय समीक्षा सस्विति

मां अराक वाजपंत्रों, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा खंधी अतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; क्रेफेसर फरीच अन्दुल्ला खान, विभागप्यस, शीक्षक अध्यपन विष्या, जामिक मितिक इस्स्विमा, दिल्ली; डॉ. अपूर्वनेद, ग्रेडर, हिंदी विधाप, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शयनम सिन्हा, ग्रोड,ओ, खड,एल, एवं एफ.एस., पुंची: भुत्री पुराह्य हरून, निदेशक, नेशनल बुक्ट हुस्ट, नई दिल्ली; श्री गेहिस धेशकर, निदेशक, दिगंगर, जदबुर।

# 80 खी.एम.एम. पंथर पर मुहित

जकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय ग्रीधिक अञ्चलका और प्रतिथाण परिषद्, जो उन्होंबन्द जागे, वह विस्ती 110016 हमा प्रकारिक तथा गंकाव क्रिटिंग प्रेस, डी-28, इंडरेस्ट्रयन धीरण, स्तह-५, मधुष 28088 हमा पुरिच। बरखा क्रिमक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए हैं। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना हैं। बरखा को कहानियाँ बार लागे और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं को खुशी के लिए पड़ने और स्थायों पाइक अनर्न में मदद करेगी। बच्चों को रोड़मर्स को खेटी-छंटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को मध्ये कहानियों उसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' को मध्ये कहानियों दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मान्ना में किताबें मिली। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायों पाटक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाट्यायों के हरक क्षेत्र में यजनात्रक लाम मिलेग। शिक्षक बरखा को पाट्यायों के हरक क्षेत्र में यजनात्रक लाम मिलेग। शिक्षक बरखा को पाट्यायों के हरक क्षेत्र में स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आधानी से किताबें उठा सके।

#### सर्वाञ्चलकार सुरक्षिक

ফকালক কাঁ পূৰ্বপন্নকাঁ কাঁ বিনা হ'ব হ'বাহাৰ কাঁ কিন্দী খাণ কাঁ জননা কৰা জনস্মানকাঁ, ফটাৰী, ফাটাইনিকিনি, চিকাহিনি একলা কিন্দী এবং বিভিন্ন পুন: ক্ৰম্ম সম্প্ৰি ক্লম কৰা নাজন অধ্যন মন্ত্ৰাক নাজি है।

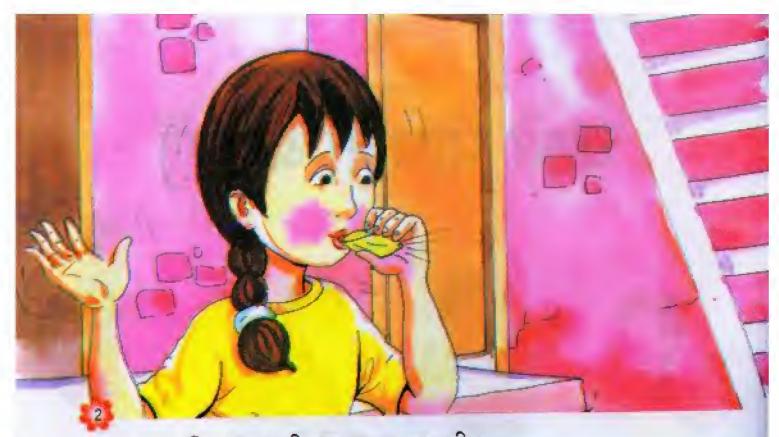
### एन.सी.इं.आर.टी, के प्रकादन विभाग के कार्यालय

- एए.गो.इं.ब्ला,डो, केंच्स, ओ असंबंद न्यर्ग, नवी दिल्ली 180 010 , व्यंति : 611-20062108
- 100, 100 परिव रेड, हेली फ्लस्टेशन डोस्टिकेट बनाशकारी 100 एटेन, केल्क्ट्र 5101 065 फ्लेक 1 1665-26725740
- नवर्गाम हुन्द्र भागन, दोकामर नवर्गाभन, आर्थसामार इस्स वहन असून १ ६७५/२७३६(४४) -
- गो.डाल्युसी, कैया, लिस्ट: भनकत बग स्टॉप चीनाटी, कोलवात तात ।।।
  भेति:: ११३१:२४४११वान
- भी डब्ल्यूको, मान्योगम, पालोगीत, गुगालाठी ३८। (६२) कीम ± (६४४)-२८१४(४)

#### प्रकाशन सङ्ख्या

अध्यक्ष, प्रकाशन किया : सी. राजस्कृतार मुख्य संपादक : रेनंता उप्यत पुष्पा तत्पादन अधिकत्यो : क्षिण कुमार पुष्पा स्थानर प्रश्नोधक : जीवन प्राप्तानी

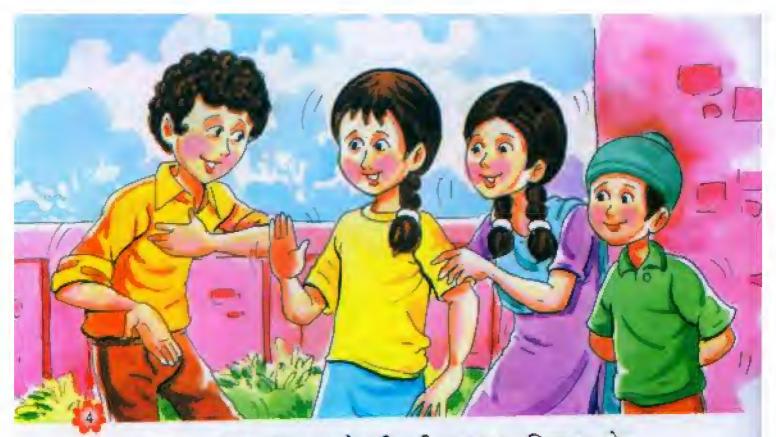




एक दिन बबली बहुत खुश थी। वह सारे घर में पी-पी करती घूम रही थी। उसने अपने लिए एक पीपनी बनाई थी। पीपनी में से बड़े ज़ोर की आवाज निकलती थी।



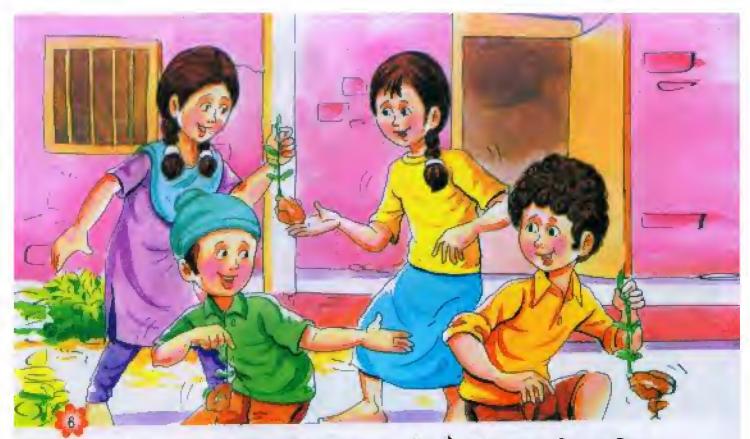
नाजिया और मदन उसके घर आए थे। मदन का मन पीपनी बजाने को कर रहा था। उसने बबली से पीपनी माँगी। बबली ने पीपनी देने से मना कर दिया।



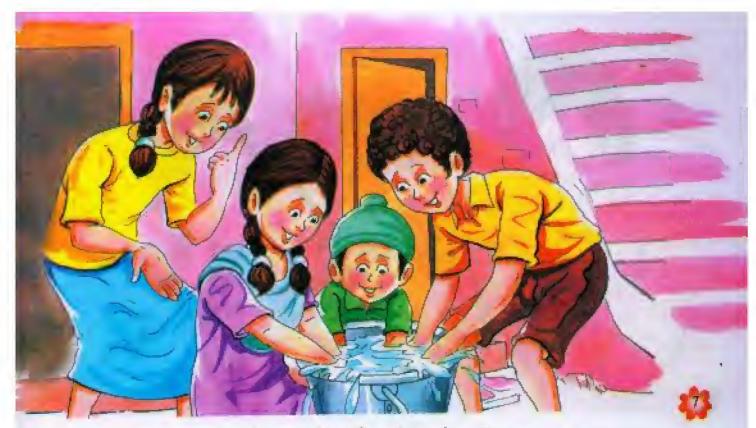
मदन बोला कि मुझे पीपनी बनाना सिखा दो। नाजिया भी पीपनी बनाना सीखना चाहती थी। बबली सिखाने के लिए मान गई। वह सबको लेकर घर के बाहर गई।



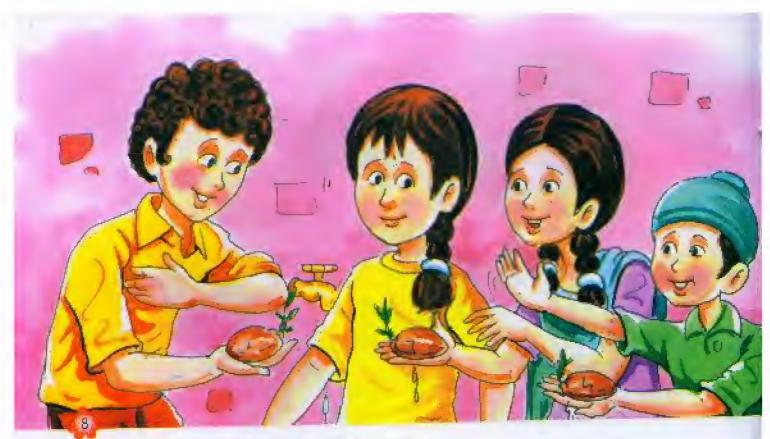
बबली ने सबसे आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने के लिए कहा। बाहर आम के बहुत सारे छोटे-छोटे पौधे दिख रहे थे। कई पौधे गुठलियों में से निकले हुए थे। सब आम की गुठलियाँ ढूँढ़ने में जुट गए।



बबली ने समझाया कि आम की कैसी गुठली चाहिए। गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला होना चाहिए। सबसे पहले नाजिया को आम की वैसी गुठली मिली। फिर मदन और जीत को भी गुठलियाँ मिल गईं।



बबली ने सबसे गुठलियाँ धोने के लिए कहा। आँगन में एक बाल्टी में पानी रखा हुआ था। सबने बाल्टी में डालकर अपनी गुठली साफ़ की। सबको इकट्ठे बाल्टी में हाथ डालने में बड़ा मज़ा आया।



बाल्टी का पानी गंदा हो गया था। सबने फिर नल पर अपनी गुठली धोयी। नल की धार में गुठली का सारा कचरा निकल गया। सबकी गुठलियाँ एकदम साफ़ हो गई।



बबली ने फिर गुठली का छिलका निकालने को कहा। उसने एक गुठली का छिलका निकाल कर दिखाया। सबने अपनी-अपनी गुठली के छिलके निकाल लिए। छिलकों के अंदर से एक और गुठली निकल आई।



सब अंदर की गुठली को ध्यान से देखने लगे। गुठली में से आम की खुशबू आ रही थी। हर गुठली में से छोटा-सा पौधा निकला हुआ था। सबने धीरे-से उस पौधे को अलग किया।



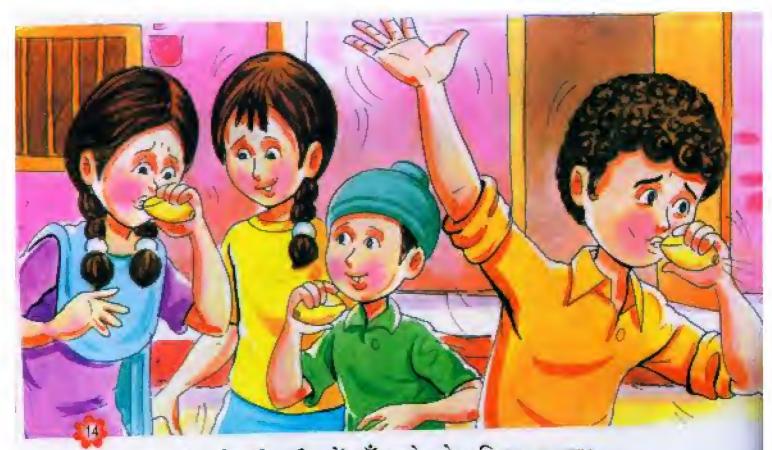
बबली ने सबसे गुठलियाँ घिसने के लिए कहा। बबली ने समझाया कि गुठली को धीरे-से घिसना चाहिए। गुठली तब तक घिसो जब तक दो फाँकें न दिखने लगें। बबली ने एक गुठली घिसकर दिखाई।



सब पत्थर पर अपनी गुठलियाँ घिसने लगे। मदन ने अपनी गुठली बहुत धीरे घिसी। नाज़िया ने अपनी गुठली जोर-जोर से घिसी। जीत ने भी गुठली घिस ली।



सबकी गुठलियों में दो फाँकें दिखने लगीं। बबली ने बताया कि पीणनी बन गई थी। उसने सबकी पीपनी हाथ में लेकर देखी। बबली ने मदन की पीपनी थोड़ी और घिसी।



बबली ने पीपनी में फूँकने के लिए कहा। मदन अपनी पीपनी पी-पी करके बजाने लगा। वह पी-पी करते हुए भागा। नाज़िया की पीपनी तो बजी ही नहीं।



बबली ने नाजिया से दूसरी गुठली लाने के लिए कहा। नाजिया एक और गुठली लेकर आयी। उसने अपनी गुठली को धोया और घिसा। इस बार नाजिया की पीपनी बज गई।



नाजिया ने खूब जोर से पीपनी बजायी। मदन भी जोर-जोर से पीपनी बजा रहा था। जीत की पीपनी भी बज रही थी। सबने खुश होकर अपनी-अपनी पीपनी बजायी।







2091



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING